प्रभात

छिपाएंगे नहीं, छापेंगे

facebook-Subharti Tv Twitter-Subharti Tv

सुभारती

76 साल बेमिसाल

उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड से 76 वर्षों से प्रकाशित आपका प्रभात अपने 77वें वर्ष में प्रवेश कर गया है। प्रभात जो जाना जाता है अपनी निर्भीक तथा बेलाग पत्रकारिता के लिए। आपके साथ से प्रभात हमेशा देगा कुरीतियों को मात करेगा हमेशा जनहित की बात, चाहे दिन हो या रात- समाज विरोधियों पर होगी घात।

www.subhartimedia.com | लखनऊ, मंगलवार, 03 मार्च 2020, मूल्य : 2.00, पृष्ठ : 12 | उत्तर प्रदेश–उत्तराखंड से प्रकाशित

दूसरे टेस्ट में भी न्यूजीलैंड बेस्ट पेज-11

बदलेगा मौसम, अबकी अप्रैल प्रथम सप्ताह तक रहेगी ठंड!

परिवर्तन

- जलवायु परिवर्तन में बढ़ोतरी के कारण 9-10 माह तक रहेगी बारिश तथा ठंड, मात्र दो-ढाई महीने तक ही सिमट जाएगी भीषण गर्मी

लखनऊ-प्रभात

पिछले वर्ष भारत वर्ष में नवम्बर.दिसंबर 2019 में मौसम विभाग के मुताबिक पश्चिम से होने वाले व्यधान की वजह से उत्तर भारतए विशेष रूप से कश्मीर घाटी, हिमांचल में भारी बर्फवारी हुई और पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने से मैदानी इलाकों में शीतलहर चली। इसके साथ हीए यदि हवा का रुख उत्तरी हो तो यहां ठंड पड़ती है। विगत नवम्बर-दिसम्बर 2019 में पहाड़ों पर बर्फबारी एव्लांच और भीषण बारिश के कहर से ठंड के साथ शीतलहर ने भी आमजनों की कठिनाई बढ़ा दी थी और मैदानी इलाकों में भी पहाड़ों पर हो रही बर्फबारी का असर दिल्ली.एनसीआर में कड़ाके की सर्दी के कारण दिखाई दिया और कश्मीर की प्रसिद्ध डल झील समेत सभी जलस्रोत तथा नल आंशिक तौर पर जम गए थे। इसके अलावा राजस्थान के माउंट आबू झील भी जम गई थी।

इसी बीच उत्तराखंड में हुई बर्फबारी और बारिश के बाद पहाड़ से लेकर मैदान तक सर्दी का प्रकोप बढ़ गया था और मैदानों इलाको में जबरदस्त कोहरा पसरा रहा। हिमांचल जबरदस्त बर्फबारी का आलम रहा। धर्मशाला, डलहौजी, चंबा, खजियार, कुल्लू और कसौली में कई बार अव्लान्च के कारण जनजीवन सिकुड़ कर कमरों में बंद हो गया था। इन इलाकों में सड़कें बंद पड़ी हुई थीं, जिससे दैनिक उपयोग की वस्तुओं की आपूर्ति भी नहीं हो पा रही थी। चंबा जिले में 26 सड़कों पर यातायात बहाल नहीं होने में बिसो दिन लग गए। वहीं बिजली आपूर्ति ठप पड़ी हुई थी। तापमान 8-10 डिग्री सेंटीग्रेड

प्रो. भरत राज सिंह
महानिदेशक (तकनीकी)
एसएमएस, लखनऊ

तक गिर गया। यहां तक कि सड़क पर बर्फका बड़ा टुकड़ा 10 फीट ऊँचा हिस्सा सड़क पर खिसता नजर आया जिससे सड़क पर चल रहे ट्रकों को छोड़कर वाहन चालक भाग खड़े हुए।

स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ के महानिदेशक प्रो. भरत राज सिंह ने बताया कि सर्द हवा की ठिठुरन व कोहरे से उत्तरी भारत का अधिकांश हिस्सा हरिद्वार से लेकर दिल्लीए लखनऊए जौनपुर व वाराणसी तक चपेट में रहा। मैदानी इलाकों जैसे लखनऊ में तापमान 0.1 डिग्री सेंटीग्रेड तक पंहुच गया थाए कई जगह नल के पानी जम गए। इसी के साथ एक और भयावह स्थिति है कि देश के 91 प्रमुख जलाशयों का जलस्तर लगातार गिर रहा है, इनकी जल संचयन क्षमता दिसम्बर 2019 मे 62 फीसदी हो गई है जो नवम्बर 2019 के अंतिम सप्ताह तक 64 फीसदी थी। पानी नवम्बर 2019 के अंतिम सप्ताह 101.77 अरब घनमीटर था, जो दिसम्बर 2019 में घटकर 98.57 अरब गहन मीटर रह गया है।

पिछले साल की तुलना में इन जलाशयों में इस समय तक पानी का स्तर काफी कम है। बीते वर्ष इस समय इनमे 96 फीसदी जल संचय था। इन जलाशयों की कुल क्षमता 157.799 अरब घनमीटर है। पूरे देश में हुई कम बारिश के कारण इन जलाशयों में शुरू से ही कम जल संचय हुआ है। पर्याप्त वर्षा के न होने और लगातार दोहन के चलते आने वाले दिनों में पानी की किल्लत होना संभावित है। इस वर्ष देश के सम्पूर्ण तटीय क्षेत्रों में भीषण बारिश हुई, नतीजन उड़ीसा कर्नाटक आंध्र प्रदेश महाराष्ट्र व गुजरात के तटीय क्षेत्र के शहरों में जनजीवन महीनों अस्त.व्यस्त रहा।

अभी कल ही मौसम विज्ञान विभागए भारत सरकार द्वारा यह बताया गया कि पचिमोत्तर पश्चिम मध्य और दक्षिण भारत के इलाकों में मार्च अप्रैल व मई के महीनों में सामान्य से अधिक गर्मी पड़ने की उम्मीद है जिसमे लू व हीट वैव का प्रकोप रहेगा तथा तापमान में भी 43 प्रतिशत बढ़ोत्तरी की सम्भावना जताई है।

प्रो. भरत राज सिंह का मानना है कि प्रत्येक वर्ष वैश्विक तापमान में बढोत्तरी से ध्रुवों व अन्य पहाड़ी इलाकों के गेसिअर से बर्फीली चट्टानें तेजी से पिघल रही हैं और इसके असर से समुद्र का पानी बढ़ रहा है और सतह के फैलाव से वाष्पीकरण की प्रक्रिया में भी तेजी आती जा रही है। अधिकांश वाष्प पृथ्वी के सतह 8-10 किलोमीटर ऊंचाई पर है। यह वाष्प पृथ्वी के चारों तरफ इकट्ठा हो रही है। जब भी कोई स्थानीय क्षेत्रों में मौसम में हलचल होती है तो या तो बादल हो जाते हैं या बारिश अथवा ओले पड़ने लगते हैं। यह स्थिति मैदानी भाग हो या रेगिस्तान कही भी पाया जा रहा है।

प्रो. भरत राज सिंह के अनुसार इस वर्ष पुनः मौसम का मिजाज बदलता रहेगा और ठंडक का असर मार्च व अप्रैल के प्रथम सप्ताह तक कम से कम दिल्ली उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश का कुछ भाग व बिहार के कछरी भाग में बना रहेगा और छिटपुट बारिश की सम्भावना भी बनी रहेगी। यही नहीं, गर्मी इस वर्ष पिछले वर्ष के अपेक्षा 0.5 से लगभग 1 डिग्री तक अधिक बढ़ सकती है और लू के थपेड़े मई व जून के दूसरे सप्ताह तक देखने को मिलेंगे। अब जलवायु परिवर्तन में बढ़ोतरी से बारिश तथा ठंड 9-10 माह से अधिक समय तक रहेगी और भीषण गर्मी मात्र दो-ढाई माह तक ही सिमट कर रह जाएगी।